Raga of the Month February, 2021

रागांग भैरव

पिछले तीन भागोंमें हमने कल्याण, केदार और बिलावल रागांग की चर्चा की थी। इस बार हम रागांग भैरव, कालिंगड़ा और जोगिया की चर्चा करेंगे। भैरव यह नाम पुराना है, परन्तु उसका प्रचलित स्वरूप प्राचीन नही। मध्य युगीन कालके ग्रंथोंमे रिषभ पंचम वर्जित भैरवके स्वरूपका वर्णन किया है। भैरव थाटके सोलह रागोंका विवरण क्रमिक पुस्तक मालिका तथा संगीत शास्त्र में पं. भातखंडेजीने किया है--- (*)

इन सोलह रागोंमेसे सिर्फ ३ राग भैरव अंगसे गाये जाते हैं - जैसे की, भैरव, रामकली और गुणक्री, जिनमें भैरव अंगकी सारी विशेषताएँ प्रतीत होती हैं।

बिभास, मेघरंजनी, सौराष्ट्रटंक / चौरासीटंक, हिजाज, शुध्द मध्यमकी गौरी (भैरव थाट की, भैरव अंगकी नही) और ललित पंचम ये सभी राग स्वर-साम्यता के हिसाबसे भैरव थाटमे रखे गए हैं , मगर वे अपना अलग स्वरूप रखते हैं। सौराष्ट्रटंक / चौरासीटंकमे दोनों धैवत लेते हुए भैरवांग प्रभावी है ।

अहीर भैरव, बंगाल भैरव, आनंदभैरव, प्रभात भैरव , शिवमत भैरव ये सब मिश्र राग हैं जिनमें भैरवके साथ दूसरे किसी रागका मिश्रण किया है; जैसे की अहिरभैरवमे पूर्वाङ्गमे भैरव और उत्तराङ्गमे काफीके स्वरोंका जोड़ होता है, बंगाल भैरव षाडव राग है- उसमे निषाद वर्जित है; आनंदभैरवमें पूर्वाङ्गमे भैरवके साथ उत्तराङ्गमे बिलावलका जोड़ दिया जाता है; प्रभात भैरवमें शुद्ध मध्यम वादी है और तीव्र मध्यमका ललित अंगसे प्रयोग होता है; शिवमत भैरवमें दोनों गांधार और दोनों निषाद लगते है।

शुध्द मध्यमकी गौरी कालिंगड़ा से काफी मिलती जुलती है। मगर शुध्द मध्यमकी गौरी संध्या समयकी रागिनी है , उसमे मन्द्र निषाद पर न्यास होता है और वह मन्द्र और मध्य सप्तकमे ज्यादहतर गायी जाती है। मध्य और तार सप्तक में गानेसे और गांधार पर न्यास करनेसे कालिंगड़ा का स्वरूप बनता है।

अब हम रागांग भैरव, कालिंगड़ा और जोगिया की विशेषताएं समझनेके लिए रागोंकी वैशिष्ठ्योंका अभ्यास करेंगे :

राग भैरव- ध वादी, रे संवादी , रे और ध आंदोलित, म -> रे और सां -> ध मींड ; रिषभ, पंचम और धैवतपर न्यास, ग़रे , नि़ध, स्वर उच्चारण धीमी गतीसे; प्रकृती शांत और गंभीर

सा रे रे सा, नि़ सा ग म प , ग म ध ध नि ध सां , सां ध ध प, प ग म ध ध प , ध म प , ध प म प, ग म रे, रे सा;

राग कालिंगड़ा - ध वादी, ग संवादी, गांधार और पंचम पर न्यास, रिषभ , मध्यम और धैवत अनाभ्यास अल्पत्व ; रे और ध आंदोलित नही होते, प्रकृती चंचल;

सा रे ग, ग रे सा नि सा रे ग, रे ग म प , ग म ध प ग म ग, प ध प ध नि , प ध नि सां, सां नि ध प, म ग रे ग, म ग रे सा ;

राग जोगिया - म वादी, सा संवादी, सम प्राकृतिक राग गुणक्री , आरोहमे ग, नि और अवरोहमे ग वर्ज्य , कोमल निषादका अल्प प्रयोग ; रे और ध आंदोलित नही होते, प्रकृती चंचल;

सा रे म प , म रे सा , म प ध प म , म प ध सां, प ध रें सां , सां नि ध प , प ध नि ध प, सां ध म रे सा

आजके ऑडिओमे हम पं. के जी गिंडे द्वारा लेक्चर डेमो में प्रस्तुत भैरव, कालिंगड़ा और जोगियाकी विशेषताएँ एवं बन्दिशोंके अंश सुनेंगे। अन्तमे पं. कुमार गन्धर्वजीने गाया हुआ राग बीहड़भैरव का अंश सुनेंगे।

{ राग बीहड़ भैरव एक धुन राग है। सोलहवीं शताब्दीमे प्रचलित भैरवके स्वरूप से मिलती जुलती मध्य प्रदेश के लोक गीत के आधार पर इस राग की निर्मिति हुई है। }

(*)गये कुछ दशकोंमे कई संगीतज्ञोंने भैरव के नये प्रकारोंका सृजन किया है; जिनके नाम हैं - आलमभैरव, आसाभैरव, बैरागीभैरव, भवमतभैरव, भिन्नभैरव, बीहड़ भैरव, चंद्रभैरव, देवताभैरव, हुसेनीभैरव, जौनभैरव, कैलाशभैरव, कोमलभैरव, कौशीभैरव, मांडभैरव , मंगलभैरव, मार्गीभैरव, नारायणीभैरव, रतिभैरव, सुहागभैरव, विक्रमभैरव, विराटभैरव, नटभैरव । उपरोक्त सभी रागों के गायन/ वादन के नमूने www.oceanofragas.com संकेत स्थलपर उपलब्ध है।

{ आभार प्रदर्शन - क्रमिक पुस्तक मालिका और संगीत शास्त्र; अभिनव गीतांजली -पं रामाश्रेय झा, Aesthetic Aspects of India's Musical Heritage- Acharya S N Ratanjankar, पं . यशवंत महाले, श्री अजय गिंडे }

०१-०२-२०२१